झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों में परिवर्तन:1900-2020 के बीच परंपरा और आधुनिकीकरण का तुलनात्मक अध्ययन

सौम्या राज[1] , डॉ सुषमा गारी[2]

[1]शोधार्थी

इतिहास विभाग, वाई.बी.एन.विश्वविद्यालयनामकुम, रांची

सारांश

यह समीक्षा-पत्र झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों के विकास और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से 1900 से 2020 तक की अवधि में। स्वतंत्रता-पूर्व काल में सरहुल, कर्मा, सोहराई और टुसु परब जैसे त्योहारों ने आदिवासी समुदायों की पहचान और सांस्कृतिक लचीलेपन को प्रदर्शित किया। वे औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक थे और सामुदायिक एकता को मजबूत करते थे। स्वतंत्रता के बाद, आधुनिकीकरण, शहरीकरण और वैश्वीकरण के प्रभावों ने इन त्योहारों के स्वरूप और प्रथाओं को बदल दिया। सरकारी समर्थन और संस्थागत पहलों ने इनके संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अध्ययन स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-पश्चात काल की तुलना करके इन त्योहारों के अनुकूलनशीलता और निरंतरता को रेखांकित करता है। निष्कर्षतः, झारखंड के सांस्कृतिक उत्सवों ने सामाजिक परिवर्तन के बावजूद सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित और सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुख्य बिंदु: सांस्कृतिक पहचान, झारखंड त्यौहार, ऐतिहासिक परिवर्तन, स्वतंत्रता के बाद, अनुकूलन

1. परिचय

पूर्वी भारत का एक राज्य झारखंड अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जीवंत परंपराओं के लिए जाना जाता है, खास तौर पर अपने स्वदेशी समुदायों की परंपराओं के लिए ***(चौधरी)***। राज्य का सांस्कृतिक परिदृश्य कई त्योहारों से सजा हुआ है जो सदियों से मनाए जाते रहे हैं, जो इस क्षेत्र के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का सार प्रस्तुत करते हैं ***(वर्मा)***। ये त्योहार सिर्फ़ सामूहिक आयोजन नहीं हैं बल्कि ये क्षेत्र के इतिहास, परंपराओं और पहचान से गहराई से जुड़े हुए हैं ***(सिंह)***। ये झारखंड के लोगों की सांस्कृतिक निरंतरता के प्रमाण के रूप में काम करते हैं, साथ ही ऐतिहासिक घटनाओं जैसे कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता के बाद के युग में हुए बदलावों से होने वाले गतिशील बदलावों को भी दर्शाते हैं ***(समद्दार; मुंडा)***। 1900 से 2020 तक की अवधि झारखंड के

सांस्कृतिक त्योहारों के विकास को जानने के लिए एक आकर्षक समयरेखा प्रदान करती है। औपनिवेशिक शासन द्वारा चिह्नित स्वतंत्रता-पूर्व युग में, इन त्योहारों ने सांस्कृतिक क्षरण के खिलाफ़ प्रतिरोध के गढ़ के रूप में काम किया ***(समद्दार)***। ये न केवल धार्मिक या मौसमी कार्यक्रम थे बल्कि स्वदेशी जनजातियों के लिए पहचान और स्वायत्तता की अभिव्यक्ति भी थे ***(वर्मा)***। स्वतंत्रता के बाद, जब भारत एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में अपनी यात्रा पर निकला, तो इन त्योहारों में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों, राज्य की नीतियों और आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के आगमन से प्रभावित होकर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए ***(मुंडा; झारखंड सरकार)***। इस अध्ययन का उद्देश्य इस समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को समझना है, तथा निर्दिष्ट अवधि में झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों की खोज करना है। त्योहारों की उत्पत्ति, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व और उनमें आए परिवर्तनों की जांच करके, शोध इस बात की व्यापक समझ प्रदान करना चाहता है कि इन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों ने 20वीं और 21वीं सदी के उथल-पुथल भरे बदलावों के बीच झारखंड की पहचान को कैसे संरक्षित और अनुकूलित किया है ***(चौधरी; सिंह)***। अन्वेषण इन त्योहारों के ऐतिहासिक साक्ष्यों का दस्तावेजीकरण करने, स्वतंत्रता से पहले और बाद की प्रथाओं की तुलना करने और उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करने पर केंद्रित होगा। यह अध्ययन न केवल झारखंड की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में योगदान देगा, बल्कि भारत के विविध सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य के संदर्भ में सांस्कृतिक लचीलापन, अनुकूलन और पहचान के व्यापक विषयों में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करेगा। संक्षेप में, यह शोध झारखंड के सांस्कृतिक उत्सवों के स्थायी महत्व पर प्रकाश डालेगा, तथा यह सूक्ष्म विवरण प्रदान करेगा कि किस प्रकार परंपरा और परिवर्तन एक साथ विद्यमान हैं, तथा 1900 से 2020 तक राज्य और उसके लोगों की सांस्कृतिक पहचान को आकार दे रहे हैं।

1.1 झारखंड सांस्कृतिक विरासत

झारखंड की सांस्कृतिक विरासत अपने स्वदेशी समुदायों की परंपराओं से बुनी गई एक जीवंत ताना-बाना है, जो इस क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण से गहराई से जुड़ी हुई है ***(चौधरी; वर्मा)***। त्योहारों, अनुष्ठानों, संगीत और कला रूपों की एक समृद्ध श्रृंखला द्वारा चिह्नित यह विरासत ऐतिहासिक परिवर्तनों के बीच झारखंड की सांस्कृतिक पहचान की लचीलापन और निरंतरता को दर्शाती है ***(सिंह; समद्दार)***। अक्सर कृषि चक्र और प्रकृति पूजा के इर्द-गिर्द केंद्रित त्योहारों ने समुदाय और प्रतिरोध की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में काम किया है, जिससे राज्य की अनूठी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किया गया है (***वर्मा; समद्दार***)। आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण की चुनौतियों के बावजूद, झारखंड की सांस्कृतिक विरासत इसके सामाजिक ताने-बाने का एक गौरवपूर्ण और अभिन्न अंग बनी हुई है, जो इसके लोगों में अपनेपन और निरंतरता की गहरी भावना को बढ़ावा देती है (***मुंडा; झारखंड सरकार***)।

1.2 स्वतंत्रता-पूर्व काल (1900-1947) के दौरान झारखंड में सांस्कृतिक उत्सव

त्योहार	जनजातियाँ/समुदाय	प्रमुख अभ्यास	सांस्कृतिक महत्व	उपनिवेशवाद का प्रभाव
सरहुल	उरांव, मुंडा	साल वृक्ष की पूजा सामुदायिक दावतें पारंपरिक नृत्य (झूमर)	नये साल की शुरुआत का प्रतीक प्रकृति और सामुदायिक बंधन का उत्सव	यद्यपि प्रत्यक्ष प्रभाव सीमित रहा, तथापि व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन महसूस किये गये।
कर्मा	मुंडा, ओरांव, हो	करम वृक्ष के चारों ओर अनुष्ठानिक नृत्य पारंपरिक गीत गाते हुए सामुदायिक भोज	उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक सांप्रदायिक संबंधों को मजबूत करता है	प्रत्यक्ष हस्तक्षेप न्यूनतम था, लेकिन उत्सव के लिए संसाधन प्रभावित हुए।
सोहराई	संथाल, उरांव, मुंडा	मवेशियों की पूजा पारंपरिक चित्रों से घर की सजावट पशु मेले	फसल और कृषि समृद्धि का जश्न मनाता है पशुधन से समुदाय के जुड़ाव को दर्शाता है	आर्थिक परिवर्तनों ने इसके पैमाने को प्रभावित किया, लेकिन उत्सव की मूल प्रथाएं बनी रहीं।
टुसु परब	कुर्मी, कृषक समुदाय	टुसु गीतों का गायन टुसु देवी की पूजा सामुदायिक सभाएँ	कृषि वर्ष के अंत का प्रतीक मौखिक परम्पराओं और सांस्कृतिक आख्यानों को संरक्षित करता है	विषयवस्तु में सूक्ष्म परिवर्तन हुए, लेकिन उत्सव का सार कायम रहा।
जानी शिकार	मुंडा, उरांव	अनुष्ठान शिकार अभियान	मार्शल परंपराओं और शिकार कौशल का जश्न मनाता है	औपनिवेशिक शिकार कानूनों के कारण प्रतिबंधित, लेकिन दूरदराज के क्षेत्रों में अभी भी

		हथियारों की तैयारी सामुदायिक शिकार भोज	सामुदायिक शक्ति और एकता पर जोर	प्रचलित है।
माघे	मुंडा, उरांव	ग्राम देवता की पूजा सामुदायिक भोज अनुष्ठान शुद्धि	कृषि वर्ष के अंत और नए वर्ष के आरंभ का प्रतीक नवीकरण और शुद्धि का प्रतीक	न्यूनतम प्रत्यक्ष प्रभाव, पारंपरिक प्रथाओं को बड़े पैमाने पर बनाए रखा गया।

स्रोतः द्वितीयक डेटा

1.3 स्वतंत्रता के बाद की अवधि (1947-2020) के दौरान झारखंड में सांस्कृतिक उत्सव

त्योहार	**महत्व**	**स्वतंत्रता के बाद का विकास (1947-2020)**	**आधुनिक अनुकूलन**	**शहरीकरण और वैश्वीकरण का प्रभाव**
सरहुल	नव वर्ष की शुरुआत और वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक। साल वृक्ष की पूजा ।	जनजातीय समुदायों के बीच एक केंद्रीय त्योहार के रूप में जारी रहा। राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त एवं प्रोत्साहित। शहरी क्षेत्रों में सरहुल जुलूसों में भागीदारी बढ़ गई।	शहरी क्षेत्रों में सरहुल जुलूस में पारंपरिक नृत्य और गीत शामिल होते हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। कार्यक्रमों के आयोजन में सरकारी सहायता।	शहरी समारोहों में बड़ी सभाएं, मीडिया कवरेज और मंचों पर प्रदर्शन शामिल होते हैं। कुछ अनुष्ठानों को शहरी परिवेश के लिए सरल बनाया गया है।
कर्मा	करम वृक्ष की पूजा से संबद्ध। उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक है।	यह विभिन्न जनजातियों के बीच एक प्रमुख त्यौहार बना रहा। राज्य ने कुछ क्षेत्रों में	करमा गीत और नृत्य आदिवासी क्षेत्रों के बाहर सांस्कृतिक उत्सवों में प्रस्तुत किये जाने लगे। शहरी उत्सवों में अक्सर	शहरीकरण के कारण समुदाय-आधारित से अधिक संगठित, मंचीय आयोजनों की ओर बदलाव आया है।

		इसे सार्वजनिक अवकाश के रूप में मान्यता देना शुरू कर दिया। 1960 के दशक के बाद सांस्कृतिक पहचान पर अधिक जोर दिया गया।	मंचीय प्रदर्शन शामिल होते हैं।	मीडिया और डिजिटल प्लेटफार्मों ने कर्मा गीतों के व्यापक प्रसार में मदद की है।
सोहराई	दिवाली के साथ मनाया जाने वाला फसल उत्सव। कृषि के लिए महत्वपूर्ण मवेशियों की पूजा।	एक प्रमुख कृषि त्यौहार के रूप में जारी रहा। सोहराय कला (दीवारों पर चित्रकारी) को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल। भागीदारी ग्रामीण क्षेत्रों से आगे बढ़कर शहरी क्षेत्रों तक पहुंच गयी।	सोहराय कला पारंपरिक कला का एक मान्यता प्राप्त रूप बन गई, जिसे राज्य की पहल से समर्थन मिला। शहरी निवासियों ने पशु मेलों और कला प्रदर्शनियों के साथ सोहराय मनाना शुरू कर दिया।	आधुनिकीकरण के कारण मवेशियों की देखभाल और कृषि में उनके उपयोग के तरीके में बदलाव आया है। सोहराय कला को राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई है, शहरी केंद्रों में इसकी प्रदर्शनियां और बिक्री होती है।
टुसु परब	यह कृषि वर्ष के अंत का प्रतीक है। प्रजनन क्षमता की प्रतीक देवी टुसु की पूजा ।	विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी लोकप्रियता निरन्तर बनी रही। सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ने के कारण यह त्यौहार राज्य के अन्य भागों में भी मनाया जाने लगा।	स्थानीय रेडियो और टेलीविजन पर टुसु गीतों का प्रसारण शुरू हुआ। शहरी क्षेत्रों में टुसु गीत प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।	शहरी समारोहों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ टुसु मेले भी शामिल होते हैं। वैश्वीकरण ने टुसु गीतों में नए विषय प्रस्तुत किए हैं , जो समकालीन मुद्दों को प्रतिबिंबित करते हैं।
मकर संक्रांति	यह त्यौहार सूर्य के मकर राशि में प्रवेश	क्षेत्रीय विविधताओं के साथ व्यापक रूप से	पतंगबाजी और पारंपरिक खेल आयोजन	शहरी उत्सव अधिक व्यवसायिक होते हैं, तथा

	का उत्सव है। यह त्यौहार फसल कटाई और सामुदायिक उत्सवों से जुड़ा है।	मनाया जाने वाला त्योहार बना रहा। पारंपरिक खेलों और खेलों को बढ़ावा देने वाले सरकारी समर्थित कार्यक्रम।	शहरी समारोहों का केंद्र बन गए। शहरों और कस्बों में सामुदायिक भोज का आयोजन किया गया।	पतंग उत्सवों का आयोजन किया जाता है। विभिन्न समुदायों के बीच त्योहार को लोकप्रिय बनाने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
जानी शिकार	शोषण के विरुद्ध आदिवासी महिलाओं के ऐतिहासिक प्रतिरोध का प्रतीक यह उत्सव। महिलाओं की शक्ति और बहादुरी का जश्न मनाता है।	स्वतंत्रता के बाद, विशेष रूप से आदिवासी अधिकार आंदोलनों के संदर्भ में, इसे नया महत्व प्राप्त हुआ। पुनः अभिनय और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा।	शहरी क्षेत्रों में जन शिकार परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन शुरू हुआ। त्योहार से महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता अभियान जुड़े।	इस त्यौहार को जनजातीय पहचान और महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में तेजी से मान्यता मिल रही है। मीडिया और गैर सरकारी संगठनों ने त्यौहार के संदेश को जनजातीय क्षेत्रों से बाहर फैलाने में मदद की है।

स्रोतः द्वितीयक डेटा

1.4 झारखंड के सांस्कृतिक उत्सव, स्वतंत्रता-पूर्व (1900-1947) और स्वतंत्रता-पश्चात (1947-2020) काल की तुलना

पहलू	स्वतंत्रता-पूर्व (1900-1947)	स्वतंत्रता के बाद (1947-2020)	तुलनात्मक विश्लेषण
सांस्कृतिक स्वायत्तता	त्यौहारों को आदिवासी समुदायों के भीतर ही संरक्षित रखा जाता था और उन पर बाहरी प्रभाव न्यूनतम होता था। अनुष्ठान और प्रथाएं मौखिक	त्योहारों के लिए सरकारी मान्यता और समर्थन। शहरीकरण और मीडिया के प्रभाव के कारण प्रदर्शन और	स्वतंत्रता-पूर्व काल में अधिक स्थानीयकृत और समुदाय-केंद्रित प्रथाएं देखी गईं।

	रूप से आगे बढ़ाई जाती थीं।	अनुकूलन में वृद्धि।	स्वतंत्रता-उत्तर काल में व्यापक भागीदारी और राज्य की भागीदारी देखी गई।
सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव	ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने भूमि अधिग्रहण और मिशनरी गतिविधियों के माध्यम से पारंपरिक प्रथाओं को बाधित किया। प्रतिरोध आंदोलन अक्सर सांस्कृतिक प्रतीकों के इर्द-गिर्द केंद्रित होते थे।	सरकार की नीतियां सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन पर केंद्रित थीं। अधिकारों और पहचान के लिए जनजातीय आंदोलनों ने सांस्कृतिक प्रथाओं की पुष्टि की।	औपनिवेशिक काल में सांस्कृतिक प्रथाओं का उपयोग प्रतिरोध के रूप में किया गया। स्वतंत्रता के बाद का काल सांस्कृतिक संरक्षण में सरकार की भूमिका को दर्शाता है।
सामुदायिक भागीदारी	त्योहारों के प्रमुख सामाजिक आयोजनों के साथ मजबूत समुदाय-आधारित भागीदारी। कृषि चक्रों और प्राकृतिक तत्वों से निकटता से जुड़े उत्सव।	निरंतर मजबूत भागीदारी, लेकिन शहरी क्षेत्रों में संगठित आयोजनों की ओर रुझान बढ़ रहा है। त्यौहार अक्सर सांस्कृतिक पहचान के प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं।	दोनों ही अवधियों में समुदाय की मजबूत भागीदारी देखने को मिली। शहरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण स्वतंत्रता के बाद के युग में भागीदारी के स्वरूप और पैमाने में परिवर्तन हुए।
अनुष्ठान और प्रथाएँ	पारंपरिक अनुष्ठानों का सख्ती से पालन किया जाता था। मौखिक परंपराएं और लोककथाएं त्योहारों का केंद्र थीं।	कुछ पारंपरिक अनुष्ठानों को सरलीकृत या संशोधित किया गया है, विशेष रूप से शहरी परिवेश में। अनुष्ठानों का अब दस्तावेजीकरण भी किया जाता है और कभी-कभी उनका व्यवसायीकरण भी	स्वतंत्रता-पूर्व अनुष्ठान अधिक जैविक और समुदाय-संचालित थे। स्वतंत्रता-पश्चात काल में कुछ व्यावसायीकरण के साथ परंपरा और आधुनिकता का मिश्रण दिखाई देता है।

		किया जाता है।	
सरकारी और संस्थागत समर्थन	सीमित सरकारी भागीदारी, मुख्यतः औपनिवेशिक दस्तावेजीकरण और मिशनरी गतिविधियों के माध्यम से। सांस्कृतिक प्रथाएं काफी हद तक अनियमित।	सांस्कृतिक उत्सवों के संरक्षण और संवर्धन के लिए महत्वपूर्ण सरकारी समर्थन। प्रमुख उत्सवों के लिए संस्थागत मान्यता और सार्वजनिक अवकाश।	स्वतंत्रता के बाद सरकार की भागीदारी औपनिवेशिक प्रशासन की सीमित भूमिका के विपरीत है। 1947 के बाद सांस्कृतिक उत्सवों में राज्य सक्रिय भूमिका निभाता है।
शहरीकरण और आधुनिकीकरण	मुख्यतः ग्रामीण उत्सव, जिनमें शहरी प्रभाव न्यूनतम था। त्यौहार कृषि चक्रों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे।	शहरीकरण के कारण त्योहारों को शहरी परिवेश के अनुकूल बनाया गया है। मीडिया, पर्यटन और व्यावसायीकरण ने त्योहारों की प्रथाओं को प्रभावित किया है।	स्वतंत्रता-पूर्व त्यौहार अधिक ग्रामीण और कृषि प्रधान थे। स्वतंत्रता के बाद, नए तत्वों के साथ शहरी उत्सवों की ओर स्पष्ट बदलाव दिखाई देता है।
सांस्कृतिक संरक्षण	सांस्कृतिक प्रथाओं को मौखिक परंपराओं के माध्यम से संरक्षित किया गया था, औपनिवेशिक अभिलेखों के बाहर उनका औपचारिक दस्तावेजीकरण बहुत कम था।	औपचारिक दस्तावेजीकरण, सरकारी सहायता और मीडिया ने सांस्कृतिक प्रथाओं को संरक्षित और फैलाने में मदद की है। त्योहारों को तेजी से आदिवासी पहचान के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है।	स्वतंत्रता-पूर्व संरक्षण मौखिक परम्पराओं पर निर्भर था। स्वतंत्रता-पश्चात काल में सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन के अधिक औपचारिक प्रयासों से लाभ हुआ।
आर्थिक प्रभाव	उत्सवों में न्यूनतम व्यावसायीकरण था; वे मुख्य रूप से समुदाय द्वारा संचालित कार्यक्रम थे जो कृषि और प्रकृति पर केंद्रित थे।	व्यावसायीकरण में वृद्धि, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में। त्यौहार अब पर्यटन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के	स्वतंत्रता-पूर्व त्यौहार आर्थिक रूप से अधिक आत्मनिर्भर थे।

		माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं।	स्वतंत्रता के बाद त्यौहारों के व्यावसायीकरण और आर्थिक प्रभाव में वृद्धि देखी गई है।
सांस्कृतिक पहचान और प्रतिरोध	त्यौहार अक्सर औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध के प्रतीक होते थे (जैसे, ताना भगत आंदोलन)।	त्यौहार सांस्कृतिक पहचान और गौरव के प्रतीक बन गए हैं, विशेष रूप से आदिवासी अधिकार आंदोलनों के संदर्भ में। कुछ त्यौहारों को राज्य सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में अपना लिया गया है।	दोनों अवधियों में सांस्कृतिक पहचान एक प्रमुख तत्व थी। स्वतंत्रता के बाद की अवधि में अधिक संस्थागत और मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक पहचान देखने को मिलती है।

स्रोतः द्वितीयक डेटा

1.5 सांस्कृतिक संदर्भ, प्रमुख त्यौहार और उनकी प्रथाएँ- स्वतंत्रता-पूर्व (1900-1947) और स्वतंत्रता-पश्चात (1947-2020) अवधि के दौरान

पहलू	**स्वतंत्रता-पूर्व (1900-1947)**	**स्वतंत्रता के बाद (1947-2020)**
सांस्कृतिक संदर्भ	**जनजातीय स्वायत्तता:** त्योहारों का प्रबंधन और उत्सव मुख्य रूप से जनजातीय और स्थानीय समुदायों के बीच ही होता था, तथा पारंपरिक प्रथाओं को बनाए रखा जाता था। **औपनिवेशिक प्रभाव:** ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने पारंपरिक प्रथाओं को बाधित किया, तथा त्योहारों के अनुष्ठानों और सामुदायिक जीवन को प्रभावित किया।	**सांस्कृतिक पुनरूत्थान:** जनजातीय संस्कृतियों के संरक्षण और संवर्धन पर केंद्रित सरकारी पहल। **एकीकरण:** त्योहारों को राज्य प्रायोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में शामिल किया गया है, जिससे उन्हें व्यापक मान्यता मिल रही है।
प्रमुख त्यौहार और उनकी प्रथाएँ	**सरहुल:** साल वृक्ष से जुड़े पारंपरिक अनुष्ठानों के साथ वसंत उत्सव के रूप में मनाया जाता है।	**सरहुल:** सरकारी प्रोत्साहन और शहरी भागीदारी से इसे बढ़ाया गया। **कर्मा:** संगठित प्रदर्शनों और मीडिया

	करमा: करम वृक्ष की पूजा पर केंद्रित, जिसमें पारंपरिक नृत्य और गीत शामिल होते हैं। **सोहराय:** मवेशियों की पूजा और सामुदायिक भोज के साथ फसल उत्सव। **टुसू परब:** पारंपरिक गीतों और सामुदायिक कार्यक्रमों के साथ कृषि वर्ष के अंत का जश्न मनाया जाता है।	प्रदर्शन के साथ आधुनिकीकरण किया गया। **सोहराय:** कला प्रदर्शनियों और शहरी समारोहों को शामिल करने के लिए इसका विस्तार किया गया। **टुसु परब:** शहरी मेलों और प्रतियोगिताओं को शामिल करने के लिए इसे अनुकूलित किया गया।
सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव	**मिशनरी गतिविधियाँ:** ईसाई मिशनरियों ने नई धार्मिक प्रथाओं की शुरुआत की, जिससे पारंपरिक त्योहार प्रभावित हुए। **भूमि नीतियाँ:** औपनिवेशिक भूमि नीतियों ने पारंपरिक भूमि उपयोग को बाधित किया और त्योहार प्रथाओं को प्रभावित किया। **प्रतिरोध आंदोलन: त्योहारों ने** औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आदिवासी प्रतिरोध में भूमिका निभाई ।	**सरकारी नीतियां:** सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन के लिए समर्थन। **सांस्कृतिक पहचान:** त्यौहार आदिवासी पहचान और गौरव के प्रतीक बन गए हैं, जिन्हें आदिवासी अधिकार आंदोलनों द्वारा बल मिला है। **शहरीकरण:** त्यौहार प्रथाओं में शहरी-ग्रामीण विभाजन व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों को दर्शाता है।
सांस्कृतिक पुनरुत्थान और अनुकूलन	**संरक्षण:** त्योहारों को मौखिक परंपराओं और सामुदायिक प्रथाओं के माध्यम से संरक्षित किया जाता था। **न्यूनतम सरकारी भागीदारी:** औपनिवेशिक प्रशासन से सीमित औपचारिक समर्थन या मान्यता।	**सरकारी पहल:** सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन के लिए सक्रिय सरकारी समर्थन। **सांस्कृतिक कार्यक्रम:** राज्य प्रायोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सार्वजनिक अवकाशों में त्योहारों का एकीकरण।
त्यौहारों की प्रथाओं में परिवर्तन	**पारंपरिक अनुष्ठान:** त्योहारों में पारंपरिक अनुष्ठानों का सख्ती से पालन किया जाता है तथा बाहरी प्रभाव न्यूनतम होता है।	**आधुनिकीकरण:** त्योहारों के रीति-रिवाजों में बदलाव देखा गया है, कुछ को अनुकूलित या सरलीकृत किया गया है।

	समुदाय-केंद्रित: ग्रामीण और जनजातीय समुदाय प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।	**मीडिया और वैश्वीकरण:** त्योहार प्रथाओं को आकार देने और फैलाने में मीडिया और वैश्वीकरण की भूमिका बढ़ गई है।
शहरीकरण और आधुनिकीकरण का प्रभाव	**ग्रामीण फोकस:** त्यौहार मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में मनाए जाते थे, जिनका शहरी प्रभाव सीमित था। **स्थानीय प्रथाएं:** प्रथाएं कृषि और स्थानीय परंपराओं से निकटता से जुड़ी रहीं।	**शहरी अनुकूलन:** त्योहारों को शहरी परिवेश के लिए अनुकूलित किया गया है, जिनमें अक्सर संगठित कार्यक्रम और प्रदर्शन शामिल होते हैं। **व्यावसायीकरण:** अधिक व्यावसायीकरण और मीडिया की भागीदारी ने त्योहारों के मनाने और उनकी धारणा को प्रभावित किया है।

1.6 स्वतंत्रता–पूर्व और स्वतंत्रता–पश्चात झारखंड के सांस्कृतिक उत्सवों का विकास और प्रभाव (1900-2020)

अवधि	**सांस्कृतिक उत्सव**	**विवरण**	**सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव**	**उद्धरण**
1900-1947 (स्वतंत्रता–पूर्व)	**सरहुल**	वसंत ऋतु में पेड़ों और प्रकृति की पूजा। प्रमुख रूप से मुंडा और उरांव समुदाय द्वारा मनाया जाता है।	आदिवासी समाज में पर्यावरण और प्रकृति के प्रति सम्मान और एकजुटता का प्रतीक। ब्रिटिश शासन के दौरान सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने का साधन।	(चौधरी, 2020)
1900-1947 (स्वतंत्रता–पूर्व)	**करम**	करम पेड़ की पूजा और कृषि की समृद्धि के लिए धन्यवाद।	कृषि आधारित जीवनशैली का प्रतीक और सामुदायिक एकजुटता का माध्यम।	(वर्मा, 2019)
1855-1856	**संथाल विद्रोह से प्रेरित सांस्कृतिक**	संथालों ने ब्रिटिश शोषण के खिलाफ विद्रोह किया और अपने त्योहारों का उपयोग	संथाल विद्रोह ने सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। त्योहार सामूहिक	(समद्दार, 2024)

	पुनरुत्थान	सांस्कृतिक अस्मिता और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में किया।	प्रतिरोध का प्रतीक बने।	
1947-1960 (स्वतंत्रता-पश्चात प्रारंभिक काल)	**सरहुल और करम**	स्वतंत्रता के बाद आदिवासी समुदायों ने इन त्योहारों को और अधिक जोर-शोर से मनाया।	आदिवासी पहचान और सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने में सहायक। सामाजिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान।	(मुंडा, 2001)
1960-2000	**सोहराई**	कृषि और पशुपालन से जुड़ा यह त्योहार फसल कटाई के बाद मनाया जाता है।	ग्रामीण और आदिवासी समाज में आर्थिक और सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा।	(सिंह, 2005)
2000-2020	**राज्य स्तरीय आयोजन**	झारखंड राज्य के गठन के बाद, सरहुल, करम, और सोहराई जैसे त्योहारों को सरकारी संरक्षण मिला।	राज्य की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बने और पर्यटन का साधन बने।	(झारखंड सरकार, 2010)

स्रोतः द्वितीयक डेटा

2. स्वतंत्रता-पूर्व सांस्कृतिक प्रथाएँ

झारखंड में स्वतंत्रता-पूर्व सांस्कृतिक प्रथाएँ अपने स्वदेशी समुदायों की परंपराओं और रीति-रिवाजों में गहराई से निहित थीं, जो प्रकृति और भूमि के साथ घनिष्ठ संबंध को दर्शाती थीं ***(चौधरी; वर्मा)***। ये प्रथाएँ मुख्य रूप से कृषि चक्रों, मौसमी परिवर्तनों और जंगलों, नदियों और पहाड़ों जैसे प्राकृतिक तत्वों की पूजा के इर्द-गिर्द केंद्रित थीं, जिन्हें पवित्र माना जाता था ***(सिंह; वर्मा)***। सरहुल, कर्मा और सोहराई जैसे त्यौहारों ने समुदायों के सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, न केवल धार्मिक अनुष्ठानों के रूप में बल्कि सांप्रदायिक बंधन और सांस्कृतिक ज्ञान के प्रसारण के अवसरों के रूप में भी ***(चौधरी; सिंह)***। औपनिवेशिक काल के दौरान, ये सांस्कृतिक प्रथाएँ प्रतिरोध और लचीलेपन का प्रतीक भी बन गईं ***(समद्दार; मुंडा)***। स्वदेशी समुदायों ने अपने त्योहारों और अनुष्ठानों का उपयोग बाहरी दबावों का सामना करने के लिए अपनी पहचान और स्वायत्तता का दावा करने के लिए किया, जिसमें औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा सांस्कृतिक आत्मसात करने के प्रयास भी शामिल थे ***(समद्दार)***। इन परंपराओं का संरक्षण एक प्रकार का सांस्कृतिक विरोध था, जो बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य के बीच समुदाय और निरंतरता की भावना को बनाए रखने में मदद करता था ***(मुंडा; वर्मा)***। संक्षेप में, झारखंड में स्वतंत्रता-पूर्व सांस्कृतिक प्रथाएँ

समुदाय की पहचान का अभिन्न अंग थीं, जो आध्यात्मिक अभिव्यक्ति और औपनिवेशिक प्रभाव के खिलाफ प्रतिरोध दोनों के साधन के रूप में काम करती थीं ***(चौधरी; समद्दार)***। इन प्रथाओं ने सांस्कृतिक लचीलेपन की नींव रखी जो स्वतंत्रता के बाद के युग में भी विकसित होती रही ***(मुंडा)***।

3. स्वतंत्रता के बाद सांस्कृतिक परिवर्तन

झारखंड में स्वतंत्रता के बाद सांस्कृतिक परिवर्तन ने क्षेत्र की पारंपरिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे, जो भारत में व्यापक सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक बदलावों से प्रभावित थे ***(मुंडा; झारखंड सरकार)***। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, नवगठित झारखंड राज्य, अपनी समृद्ध आदिवासी विरासत के साथ, आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण और राष्ट्रीय एकीकरण और विकास के उद्देश्य से सरकारी नीतियों के प्रभावों का अनुभव करने लगा ***(मुंडा)***। इन कारकों ने पारंपरिक त्योहारों और अनुष्ठानों सहित कई सांस्कृतिक प्रथाओं में धीरे-धीरे परिवर्तन किया ***(झारखंड सरकार; सिंह)***।स्वतंत्रता के बाद की अवधि में मुख्यधारा की भारतीय संस्कृति का प्रभाव बढ़ता गया, जिसके कारण अक्सर स्वदेशी प्रथाओं का सम्मिश्रण या परिवर्तन हुआ । त्यौहार जो कभी पूरी तरह से स्थानीय थे और भूमि और आदिवासी परंपराओं से गहराई से जुड़े थे, उनमें व्यापक राष्ट्रीय उत्सवों के तत्व शामिल होने लगे, जो झारखंड के व्यापक भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे में बढ़ते एकीकरण को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, आदिवासी विरासत को संरक्षित करने के प्रयासों के तहत कुछ त्यौहारों को सरकारी मान्यता और प्रचार-प्रसार ने कभी-कभी इन प्रथाओं का औपचारिकरण या व्यावसायीकरण किया, जिससे उनकी मूल समुदाय-केंद्रित प्रकृति बदल गई।इन बदलावों के बावजूद, झारखंड में कई समुदायों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का प्रयास किया है, अपनी परंपराओं को नए सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में ढालते हुए अपनी विरासत को परिभाषित करने वाले मूल तत्वों को संरक्षित किया है। इस प्रकार स्वतंत्रता के बाद का समय परिवर्तन और निरंतरता दोनों का समय रहा है, जहाँ पारंपरिक प्रथाओं को नया रूप दिया गया है, लेकिन वे विकसित होते भारत में सामुदायिक पहचान और सांस्कृतिक लचीलेपन की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में काम करना जारी रखते हैं***(झारखंड सरकार)***।

4. सांस्कृतिक पहचान और त्यौहार

झारखंड में सांस्कृतिक पहचान उसके त्यौहारों से गहराई से जुड़ी हुई है, जो इस क्षेत्र की अनूठी परंपराओं और सांप्रदायिक मूल्यों की शक्तिशाली अभिव्यक्ति के रूप में काम करते हैं। ये त्यौहार, जो कृषि चक्रों और भूमि की प्राकृतिक लय में निहित हैं, न केवल उत्सव की घटनाएँ हैं, बल्कि स्वदेशी समुदायों के लिए पहचान के आवश्यक चिह्न भी हैं। वे झारखंड के सांस्कृतिक ताने-बाने को परिभाषित करने वाली मान्यताओं, रीति-रिवाजों और ऐतिहासिक कथाओं को समेटे हुए हैं। सरहुल , कर्मा और सोहराय जैसे त्यौहारों के निरंतर पालन के माध्यम से, समुदाय अपनी विरासत से अपने संबंध को मजबूत करते हैं, अपनी विशिष्ट पहचान को संरक्षित करते हैं और सांस्कृतिक ज्ञान को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाते हैं। भले ही ये त्यौहार समय के साथ विकसित होते रहें, लेकिन वे

झारखंड की सांस्कृतिक पहचान के केंद्र में बने हुए हैं, जो समाज में व्यापक बदलावों के बीच लचीलेपन और निरंतरता का प्रतीक हैं ***(मुंडा)***।

5. सांस्कृतिक उत्सवों का तुलनात्मक विश्लेषण

आजादी से पहले और बाद में झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों का तुलनात्मक विश्लेषण स्थायी परंपराओं और महत्वपूर्ण परिवर्तनों दोनों को प्रकट करता है। आजादी से पहले, सरहुल , कर्मा और सोहराय जैसे त्योहार कृषि जीवनशैली और आदिवासी रीति-रिवाजों से गहराई से जुड़े थे, जो न्यूनतम बाहरी प्रभाव के साथ अंतरंग, समुदाय केंद्रित अनुष्ठानों के रूप में कार्य करते थे। आजादी के बाद, इन त्योहारों में आधुनिकीकरण, सरकारी हस्तक्षेप और मुख्यधारा की भारतीय संस्कृति के बढ़ते संपर्क के कारण परिवर्तन हुए। जबकि कुछ पहलुओं का औपचारिक या व्यवसायिककरण हो गया, जिससे व्यापक सार्वजनिक उत्सव हो गया, मूल परंपराएं बनी रहीं, समुदायों ने समकालीन संदर्भों के लिए अपनी प्रथाओं को ढाल लिया। यह विश्लेषण झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों की लचीलापन और अनुकूलनशीलता को रेखांकित करता है, जो विकसित सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य के बीच क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ***(मुंडा; वर्मा)***।

6. सांस्कृतिक प्रथाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण ने झारखंड की सांस्कृतिक प्रथाओं पर गहरा प्रभाव डाला है, जिसके सकारात्मक और चुनौतीपूर्ण दोनों ही परिणाम सामने आए हैं। एक ओर, वैश्वीकरण ने वैश्विक संस्कृतियों के साथ अधिक संपर्क और आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की है, जिससे आर्थिक विकास के लिए नए विचार, तकनीक और अवसर सामने आए हैं। इसने कुछ सांस्कृतिक प्रथाओं के आधुनिकीकरण की अनुमति दी है, जिससे वे अधिक सुलभ हो गई हैं और व्यापक भागीदारी को सक्षम बनाया है, खासकर डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और मीडिया के माध्यम से। हालाँकि, वैश्वीकरण ने झारखंड की पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी पेश की हैं। मुख्यधारा और वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों के प्रवाह ने कुछ त्योहारों के कमजोर पड़ने या उनका व्यवसायीकरण किया है, जो अक्सर उनके मूल सांप्रदायिक और आध्यात्मिक महत्व को छीन लेते हैं ***(सिंह; समद्दार)***। इसके अतिरिक्त, वैश्विक रुझानों से प्रभावित युवा पीढ़ी पारंपरिक प्रथाओं को बनाए रखने में कम रुचि दिखा सकती है, जिससे समय के साथ सांस्कृतिक ज्ञान और पहचान का संभावित नुकसान हो सकता है। इन चुनौतियों के बावजूद, झारखंड में कई समुदाय वैश्वीकरण के समरूप प्रभावों का विरोध करना जारी रखते हैं, अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं को इस तरह से अनुकूलित करने का प्रयास करते हैं जो व्यापक दुनिया के साथ जुड़ते हुए उनके मूल मूल्यों और महत्व को बनाए रखते हैं ***(चौधरी; वर्मा)***।

7. निष्कर्ष

झारखंड के सांस्कृतिक त्योहारों का इतिहास सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों का प्रतिबिंब है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में, ये त्योहार आदिवासी समुदायों के लिए सांस्कृतिक पहचान और औपनिवेशिक प्रतिरोध के प्रतीक थे। स्वतंत्रता के बाद, आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के प्रभावों ने इनके स्वरूप को प्रभावित

किया, लेकिन उनकी मूल भावना और महत्व बरकरार रहे। सरकारी समर्थन और शहरीकरण ने त्योहारों को व्यापक पहचान दिलाई, हालांकि कुछ प्रथाओं का व्यवसायीकरण भी हुआ। यह समीक्षा दर्शाती है कि परंपरा और परिवर्तन कैसे सह-अस्तित्व में हैं, और झारखंड की सांस्कृतिक विरासत को निरंतरता प्रदान करते हैं। भविष्य में, इन त्योहारों के संरक्षण और संवर्धन के लिए सामुदायिक भागीदारी और संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता होगी, ताकि सांस्कृतिक पहचान और विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सके।

प्रमुख संदर्भ

1. चौधरी, आर. झारखंड के सांस्कृतिक त्योहार. रांची विश्वविद्यालय, 2020।
2. वर्मा, ए. भारत के आदिवासी समुदायों के कृषि त्योहार. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2019।
3. समद्दार, आर. संथाल विद्रोह और सांस्कृतिक जागरण. आदिवासी अनुसंधान संस्थान, 2024।
4. मुंडा, बी. स्वतंत्रता के बाद झारखंड में आदिवासी आंदोलन. आदिवासी धरोहर प्रकाशन, 2001।
5. सिंह, पी. सोहराईः फसल का त्योहार. अकादमिक प्रेस, 2005।
6. झारखंड सरकार. झारखंड में सांस्कृतिक पर्यटन. सरकारी प्रकाशन, 2010।
7. *आदिवासी अनुसंधान और सांस्कृतिक पत्रिका.*आदिवासी अनुसंधान संस्थान, खंड 15, अंक 2, 2022.
8. *भारतीय मानवविज्ञान पत्रिका. भारतीय मानवविज्ञान समाज*, खंड 53, अंक 3, 2021.
9. *आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक (EPW).* समीक्षा ट्रस्ट, खंड 56, अंक 42, 2021.
10. *आदिवासी अध्ययन पत्रिका. भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद*, खंड 8, अंक 1, 2020.
11. *झारखंड विकास और प्रबंधन अध्ययन पत्रिका (JJDMS).* ज़ेवियर सामाजिक सेवा संस्थान, खंड 18, अंक 1, 2021.